हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

9 विद्यार्थियों ने लिया नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प



10 पराली जलाने वालों पर ड्रोन से नजर, 3 किमी तक निगरानी



खबर संक्षेप

स्कूटी सवार युवतियों को बचाने में पलटी स्कॉर्पियो

फतेहाबाद। शहर के भट्टू रोड पर स्कूटी सवार युवतियों को बचाने के प्रयास में एक स्कॉर्पियो गाड़ी अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसा इतना भयावह था कि मौके पर मौजूद लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। गाड़ी पलटने के दौरान सड़क के डिवाइडर पर लगा खंभा भी टूट गया। पलटने के बाद गाड़ी डिवाइडर पर चढ़ गई। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। मिली जानकारी के अनुसार, स्कॉर्पियो गाड़ी भट्टू की तरफ से फतेहाबाद आ रही थी। इसी दौरान भट्टू रोड पर स्कूटी सवार युवतियां सामने आ गईं।

पंजाब का युवक अवैध देसी कट्टे समेत गिरफ्तार

फतेहाबाद। सीआईए टोहाना की टीम ने नया बाईपास क्षेत्र से एक युवक को .315 बोर के अवैध देसी कट्टे के साथ गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान कर्ण सिंह पुत्र ऋषिपाल निवासी गांव रामपुरा गुजरान, जिला संगरूर के रूप में हुई है। सीआईए प्रभारी निरीक्षक अजय कुमार ने बताया कि पुलिस टीम नया बाईपास टोहाना स्थित डांगरा रोड चौक के नजदीक गश्त और अपराध रोकथाम के लिए तैनात थी। इसी दौरान पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि पंजाब का रहने वाला एक संदिग्ध युवक अवैध हथियार लेकर नया बस स्टैंड के नजदीक नहर पुल के पास खड़ा है।

चेक बाउंस मामले में दो वांछित दबोचे

सिरसा। जिला की पीओ स्टाफ सिरसा पुलिस की एक टीम ने महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए चेक बाउंस मामले में दो वांछितों को काबू किया है। पीओ स्टाफ प्रभारी ने बताया कि अदालत द्वारा आरोपियों को बार-बार नोटिस देने पर भी आरोपी अदालत में हाजिर नही हुए। माननीय अदालत ने आरोपी गगनजोत को 24 मार्च 2023 को पीओ घोषित किया जबकि आरोपी रविंद्र को 15 जून 2026 को पीओ घोषित किया गया था।

बाइक चोरी मामले में दूसरा आरोपी पकड़ा

फतेहाबाद। टोहाना के राजनगर क्षेत्र से दिनदहाड़े मोटरसाइकिल चोरी करने के मामले में चंडीगढ़ रोड पुलिस चौकी की टीम ने कार्रवाई करते हुए दूसरे आरोपी को दबोच लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान सागर उर्फ बछी पुत्र राजेन्द्र सिंह निवासी बाबा बुटा शाह बस्ती, टोहाना के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। थाना शहर टोहाना प्रभारी निरीक्षक संदीप ने बताया कि राजनगर टोहाना निवासी शुभम ने पुलिस को शिकायत दी थी कि गत 22 अगस्त को दोपहर करीब 3 बजे वह अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर राजनगर स्थित धर्मशाला के नजदीक एक दुकान पर घरेलू सामान खरीदने गया था। उसने अपनी मोटरसाइकिल दुकान के बाहर खड़ी की थी।

मंदिरों में तैयारियां शुरू, पूजन सामग्री से सजी दुकानें

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

मां दुर्गा की आराधना के प्रमुख पर्व शारदीय नवरात्र आज से शुरू होंगे। आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के साथ नवरात्र की शुरुआत होगी और इसी दिन घरों व मंदिरों में घटस्थापना की जाएगी। पंचांग के अनुसार, इस बार तिथियों के फेरबदल के कारण दुर्गा अष्टमी और महानवमी दोनों 19 अक्टूबर को ही पड़ेंगी, जबकि 20 अक्टूबर को विजयादशमी यानी दशहरा मनाया जाएगा। श्री श्याम मंदिर फतेहाबाद के पुजारी पंडित सोनू शर्मा का कहना है कि रविवार को भगवती का हाथी पर सवार होकर आना शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इसे अच्छी बारिश और सुख-समृद्धि का संकेत माना जाता है। नवरात्रों को लेकर शहर के मंदिरों में अभी से तैयारियां शुरू हो गई हैं। बाजार में भी नवरात्रों पर पूजन सामग्री की दुकानें सज गई हैं।

शारदीय नवरात्रे आज से, हाथी पर सवार होकर आएंगी मां दुर्गा, घटस्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 6:19 बजे से

धार्मिक मान्यता के अनुसार इसे अच्छी बारिश और सुख-समृद्धि का संकेत

देवी के नौ स्वरूपों की पूजा

नवरात्र के दौरान मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा होगी। पंडित सोनू शर्मा के अनुसार 11 अक्टूबर को मां शैलपुत्री, 12 को मां ब्रह्मचारिणी, 13 को मां चंद्रघंटा, 14 को मां कूष्मांडा, 15 को मां स्कंदमाता, 16 को मां कात्यायनी, 17 को मां कालरात्रि, 18 को मां महागौरी और 19 अक्टूबर को मां सिद्धिदात्री की पूजा की जाएगी। इस बार 19 अक्टूबर, सोमवार को दुर्गा अष्टमी और महानवमी दोनों पड़ रही हैं। ऐसे में इस दिन अष्टमी-नवमी से जुड़े पूजा-पाठ, हवन और कन्या पूजन किए जाएंगे। संधि पूजा का भी विशेष महत्व रहेगा। धार्मिक अनुष्ठानों के समय के लिए श्रद्धालुओं को स्थानीय पंचांग देखना उचित रहेगा।

आज घटस्थापना, सुबह का मुहूर्त 6:19 से 10:12 तक

पंडित सोनू शर्मा ने बताया कि 11 अक्टूबर को घटस्थापना के लिए सुबह 6:19 बजे से 10:12 बजे तक का शुभ मुहूर्त बताया गया है। इसकी अवधि करीब 3 घंटे 52 मिनट रहेगी। इसके अलावा अभिजीत मुहूर्त सुबह 11:44 बजे से दोपहर 12:31 बजे तक रहेगा। हालांकि अलग-अलग शहरों में सूर्योदय और स्थानीय पंचांग की गणना के अनुसार मुहूर्त में कुछ अंतर हो सकता है।



फतेहाबाद। लाइटों से सजा श्री श्याम मंदिर।

20 अक्टूबर को दशहराः नवरात्र के समापन के अगले दिन 20 अक्टूबर मंगलवार को विजयादशमी यानी दशहरा मनाया जाएगा। कई स्थानों पर इस दिन रावण दहन के साथ रामलीला के कार्यक्रम और दुर्गा प्रतिमा विसर्जन भी किया जाएगा।

नवरात्र की प्रमुख तारीखें

11 अक्टूबर	घटस्थापना व मां शैलपुत्री पूजा
12 अक्टूबर	मां ब्रह्मचारिणी
13 अक्टूबर	मां चंद्रघंटा
14 अक्टूबर	मां कूष्मांडा
15 अक्टूबर	मां स्कंदमाता
16 अक्टूबर	मां कात्यायनी
17 अक्टूबर	मां कालरात्रि
18 अक्टूबर	मां महागौरी
19 अक्टूबर	दुर्गा अष्टमी और महानवमी
20 अक्टूबर	विजयादशमी/दशहरा

ऐसे होगी घर में कलश स्थापना

पंडित सोनू शर्मा ने बताया कि घटस्थापना के लिए सबसे पहले पूजा स्थल की साफ-सफाई कर चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाया जाता है। मां दुर्गा की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करने के बाद मिट्टी के पात्र में जौ बोए जाते हैं। कलश में जल भरकर उसमें अक्षत, सुपारी और सिक्का रखा जा सकता है। कलश के मुख पर आम या अशोक के पत्ते रखकर ऊपर नारियल स्थापित किया जाता है।

इनेलो नेता करण कुणाल ने कार्यकर्ताओं के साथ मंडी का किया दौरा

खरीद में देरी पर भड़के किसान टोहाना-रतिया रोड किया जाम

- दोपहर बाद शुरू होने वाली खरीद और सीमित समय को लेकर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

जिले के शहर टोहाना की अनाज मंडी में फसल की समय पर खरीद नहीं होने और किसानों को हो रही परेशानी के विरोध में शनिवार को किसानों ने टोहाना-रतिया रोड पर जाम लगा दिया। एडिशनल अनाज मंडी के सामने सुबह 11:35 बजे किसानों ने सड़क पर जाम लगाकर खरीद व्यवस्था के प्रति नाराजगी जताई। किसानों का कहना था कि वे अपनी फसल लेकर मंडी में पहुंच रहे हैं, लेकिन समय पर खरीद नहीं होने के कारण उन्हें इंतजार करना पड़ रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक मौके पर खरीद शुरू करने का आश्वासन नहीं मिलता, तब तक जाम नहीं खोला जाएगा। बाद में वेयरहाउस मैनेजर संजय हुड्डा ने मंडी में मौजूद फसल की खरीद करवाने और जरूरत पडऩे पर रात 10 बजे तक खरीद जारी रखने का आश्वासन दिया। इसके बाद किसानों ने जाम खोल दिया। इससे पहले इनेलो नेता करण कुणाल ने अपने कार्यकर्ताओं के साथ मंडी का दौरा कर खरीद व्यवस्था का जायजा लिया।



फतेहाबाद। धान खरीद को लेकर टोहाना में प्रदर्शन करते किसान।

मैनेजर बोले : मंडी में मौजूद माल खरीदकर ही जाएंगे

रोड जाम के दौरान वेयरहाउस मैनेजर संजय हुड्डा ने प्रदर्शनकारियों और किसानों से बातचीत कर उन्हें आश्वस्त किया कि मंडी में मौजूद फसल की खरीद करवाने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जरूरत पडऩे पर रात 10 बजे तक खरीद की जाएगी और मंडी में मौजूद माल की खरीद सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किए जाएंगे। मैनेजर के इस आश्वासन के बाद किसानों ने जाम खोल दिया। प्रदर्शन के दौरान किसानों ने खरीद में तेजी लाने, मंडी में व्यवस्थाएं सुधारने और फसल लेकर आने वाले किसानों को अनावश्यक इंतजार से राहत दिलाने की मांग की।



रतिया। एसडीएम से मिलने जाते किसान यूनियन का प्रतिनिधिमंडल।

धान खरीद में समस्याओं को लेकर किसान यूनियन ने एसडीएम और मंडी सचिव से की मुलाकात

रतिया। भारतीय किसान यूनियन, एकता उगराहां की रतिया इकाई के प्रतिनिधियों ने स्थानीय अनाज मंडी में धान की खरीद के दौरान किसानों को आ रही व्यावहारिक समस्याओं को लेकर एसडीएम और मंडी सचिव से मुलाकात की। इस दौरान यूनियन ने किसानों की प्रमुख मांगों को उठाते हुए जल्द समाधान की मांग की। यूनियन ने प्रशासन के समक्ष मांग रखी कि जिन किसानों की धान की फसल में नमी का स्तर निर्धारित मानकों के अनुसार सही है, उन्हें हैफेड एवं हरियाणा स्टेट वेयरहाउसिंग कॉर्पोरेशन जैसी एजेंसियों द्वारा तुरंत बारदाना उपलब्ध कराया जाए। यूनियन पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि संबंधित एजेंसियां बारदाना देने से यह कहकर इनकार कर रही हैं कि राइस मिलों का अलॉटमेंट होने के बाद ही बारदाना दिया जाएगा। इस वजह से किसानों को मंडी में अपनी फसल बेचने के लिए अनावश्यक रूप से रुकना पड़ रहा है। इसके अलावा, किसान प्रतिनिधियों ने धान में नमी के नाम पर की जा रही कथित कटौती का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया।

आढ़ती एसोसिएशन के प्रयासों से नई अतिरिक्त मंडी शुरू हुई धान की खरीद



सिरसा। नई अतिरिक्त अनाज मंडी शुरु हुई धान की खरीद के मौके पर प्रधान व अन्य।

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

मंडी में फसल बेचने के दौरान किसानों को कोई समस्या न आए, इसके लिए दी एसोसिएशन आढ़तियान अनाज मंडी, सिरसा के प्रधान प्रेम बजाज ने अथक प्रयास करते हुए उपायुक्त से आग्रह कर नई अतिरिक्त अनाज मंडी (बाईपास) मंजूर करवाई, जिसमें शनिवार को हैफड एजेंसी द्वारा परमल धान की खरीद का कार्य शुरू हो गया है। प्रधान प्रेम बजाज ने बताया कि यहां किसानों के लिए उचित बैठने की व्यवस्था, पीने के पानी की व्यवस्था, शौचालय की व्यवस्था कर दी गई है। यहां पर्याप्त जगह है इसलिए आढ़तियों व किसानों से आग्रह है कि वे परमल धान की फसल नई अतिरिक्त मंडी (बाइपास) में गिरवाएं।

किसानों की समस्याओं को लेकर इनेलो ने सौंपा ज्ञापन



ऐलनाबाद। इंडियन नेशनल लोकदल के जिलाध्यक्ष जसवीर सिंह जस्सा ने कहा कि आज प्रदेश सरकार की किसानों के प्रति उदासीनता के चलते किसान समाज स्वयं को पूरी तरह से हाशिए पर मान रहा है क्योंकि सरकार उनकी उपज के प्रति पूरी तरह उन्हें उपेक्षित कर रही है। वे शनिवार को ऐलनाबाद अनाजमंडी में धान व बाजरा की फसल के निरीक्षण के उपरांत उपस्थित किसानों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज पूरे हरियाणा में मंडियों में किसानों को उनकी उपज के भाव व उचित सहुलियतें नहीं दी जा रही है जिसके चलते फैक्टरी संचालक किसानों की धान उपज औने पौने दामों में खरीदकर उनकी आर्थिक स्थिति को पहले से भी कमजोर बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि इनेलो आरंभ से ही शोषित व पीड़ित किसानों के पक्ष में है और भविष्य में भी उनके हितों के लिए सदैव सड़क से विधानसभा तक संघर्ष करेगी।

9600 नशीली गोलियां बरामद

- नशा तस्करी करने वालों पर शिकंजा, आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

मेडिकल नशे की तस्करी करने वालों पर शिकंजा कसते हुए रतिया पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने व्यावसायिक मात्रा में 9,600 नशीली गोलियों की बड़ी खेप बरामद कर एक आरोपी को दबोच लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान फतेहाबाद जिले के गांव महमड़ा निवासी खजान सिंह के रूप में हुई है। बरामद नशीली गोलियों की अनुमानित बाजार कीमत करीब 7 लाख रुपये आंकी गई है। डीएसपी रतिया कुलवंत सिंह ने बताया कि एसपी निकिता खट्टर के निर्देशानुसार नशा तस्करों पर लगातार शिकंजा कसा जा रहा है। इसी कड़ी में पुलिस चौकी महमड़ा प्रभारी सहायक उपनिरीक्षक ज्योति प्रसाद के नेतृत्व में पुलिस टीम गांव ढाणी बबनपुर क्षेत्र में गश्त पर थी।



रतिया। पुलिस द्वारा नशीली गोलियों सहित पकड़ा गया युवक।

एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज

डीएसपी ने बताया कि पुलिस ने आरोपी के पास से 600 पत्तों में कुल 6,000 ट्रामाडोल गोलियां, 240 पत्तों में कुल 3,600 अल्प्राजोलम गोलियां बरामद की है। पुलिस ने सभी नशीली गोलियों को नियमानुसार सीलबंद कर कब्जे में ले लिया है। इस संबंध में आरोपी के खिलाफ थाना सदर रतिया में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है।

प्रदर्शन करने जा रहे कांग्रेसी हिरासत में

- विधायक शीशपाल के निवास से रवाना होने से पहले पहुंची पुलिस

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

दिल्ली में प्रदर्शन के लिए सिरसा से जा रहे कांग्रेस के स्थानीय नेताओं को पुलिस ने सुबह सिरसा में हिरासत में ले लिया। पुलिस ने विधायक शीशपाल केहरवाला को आवास के बाहर से पार्टी नेताओं के साथ हिरासत में लिया। कांग्रेसजनों ने पुलिस की इस कार्रवाई का विरोध जताते हुए सरकार व पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। पुलिस सबको बसों में बिठाकर ऐलनाबाद ले गई। वरिष्ठ कांग्रेस नेता राजकुमार शर्मा, संदीप नेहरा, राजेश चाडीवाल, सुभाष जोधपुरिया, रणधीर सिंह धीरा, सतपाल मेहता, चेयरमैन राम सिंह सोलंकी, लादूराम पूनिया, सुरजीत भावदीन, बलविंद्र रोड़ी, मलकीत रंधावा विजय कागदाना, जसवंत पनिहारी चेयरमैन लवप्रीत सिंह, प्रदेश युवा कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मोहित शर्मा, एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष शुभम पुनिया सहित सैकड़ों कार्यकर्ता शनिवार सुबह पार्टी के कालांवाली से विधायक शीशपाल केहरवाला के हुडा सेक्टर स्थित निवास पर एकत्रित हुए थे। उनके दिल्ली रवाना होने से पहले ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और नेताओं व कार्यकर्ताओं को हिरासत में ले लिया।



सिरसा। दिल्ली जा रहे कांग्रेस कार्यकर्ताओं का हिरासत में लेते हुए।

कांग्रेस नेता मुकेश प्रजापति डिटेन

फतेहाबाद। कांग्रेस पार्टी के ओबीसी प्रकोष्ठ के पूर्व नगर अध्यक्ष मुकेश प्रजापति द्वारा सैकड़ों युवा साथियों के साथ दिल्ली कूच का आह्वान करते ही पुलिस-प्रशासन हरकत में आ गया। प्रशासन ने बीती शाम को ही मुकेश प्रजापति को उनके निवास स्थान पर नजरबंद कर दिया। युवाओं के बड़े जत्थे के साथ दिल्ली रवाना होने की तैयारी कर रहे कांग्रेस नेता पर हुई इस कार्रवाई से कार्यकर्ताओं में काफी गुस्सा है। डिटेन किए जाने के बाद सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए मुकेश प्रजापति ने कहा कि पुलिस और प्रशासन हमारे अपने लोग हैं और हम उनका पूरा सम्मान करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी लड़ाई पुलिस या प्रशासन से नहीं, बल्कि सरकार की नीतियों और उसकी जवाबदेही से है।

भट्टूकलां में संयुक्त मोर्चे का प्रदर्शन ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग



भट्टूकलां। संयुक्त किसान मोर्चा के राष्ट्रव्यापी आह्वान पर शनिवार को अखिल भारतीय किसान सभा, खेत मजदूर यूनियन और सीटू के बैनर तले स्थानीय मार्केट कमेटी कार्यालय के सामने एक विशाल विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार की नीतियों और चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला दहन कर उनसे तुरंत इस्तीफे की मांग की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सुभाष चंद्र भादु ने की, जबकि मंच संचालन व मुख्य वक्ता की भूमिका किसान सभा के जिला प्रधान विष्णु दत्त तथा रोहतास डूडी ने निभाई।

रणजी ट्रॉफी: उत्कर्ष पर कनिष्क का हरियाणा टीम में चयन

सिरसा। सिरसा के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर कनिष्क चौहान ने एक बार फिर अपने परिश्रम, पुरुषार्थ से रणजी ट्रॉफी हरियाणा में शामिल होकर सिरसा को गौरवान्वित किया है। उल्लेखनीय है कि क्रिकेटर कनिष्क चौहान का चयन 2026-27 समयावधि के तहत खेली जाने वाली रणजी ट्रॉफी इलाइट के तहत हरियाणा की टीम में हुआ है। इस ट्रॉफी में हरियाणा के अलावा चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, मुंबई, रेलवे, राजस्थान, तमिलनाडू व उत्तराखंड की टीमें भी भाग ले रही हैं। अतरराष्ट्रीय क्रिकेटर कनिष्क चौहान की इस उपलब्धि पर सिरसा क्रिकेट एसोसिएशन के जिला सचिव डॉ. वेद बेनीवाल, प्रशिक्षक जसकरण सिंह, शंकर सैनी व विजय कुमार ने प्रसन्नता का इजहार करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव डॉ. वेद बेनीवाल ने कनिष्क चौहान की इस उपलब्धि पर कहा कि अपने श्रेष्ठ खेल कौशल के आधार पर कनिष्क चौहान ने जिस प्रकार पहले भी वैश्विक स्तर पर सिरसा को गौरवान्वित किया है, वह श्लाघायोग्य है।



धर्म-कर्म 14 से शुरू होगा रामलीला मंचन, 1928 से निर्बाध जारी है परंपरा

15 साल से पांच बार प्रधान चुने गए

सुरेन्द्र असीजा ⏭फतेहाबाद

वर्ष 1928 से फतेहाबाद में रामलीला का मंचन कर रही श्रीराम सेवा समिति की 99वीं रामलीला का मंचन 14 अक्टूबर से शुरू हो रहा है। यह एकमात्र ऐसी रामलीला है जिसका मंचन निर्बाध रूप से हो रहा है। पिछले 99 सालों से लगातार चल रही रामलीला में हालांकि समिति को आर्थिक रूप से नुकसान ही होता है लेकिन इसके बावजूद समिति के अध्यक्ष धर्मपाल बुढलाडिया रामलीला को लगातार जारी रखने के पक्षधर है। धर्मपाल बुढलाडिया का कहना है कि कुछ चीजें सिर्फ फायदें और नुकसान के लिहाज से नहीं देखी जाती। रामलीला मंचन हमारे संस्कार और संस्कृति से जुड़ा है। धर्मपाल बुढलाडिया कहते हैं कि मौजूदा समय में अकेली रामलीला ही एकमात्र उपाय रह गया है, जिसके जरिये हम अपनी आने वाली पीढ़ी को न केवल अच्छे संस्कार दे सकते हैं। धर्मपाल बुढलाडिया कहते भी हैं कि यह रामलीला नहीं, उनके दादा द्वारा लगाया गया एक पौधा है, जिसे सिंचना उनके लिए एक धर्म है।

दादा द्वारा लगाए गए रामलीला के पौधे को सींच रहे पोते धर्मपाल बुढलाडिया

स्वर्णिम कार्यकाल के रूप में माना जा रहा है धर्मपाल



धर्मपाल बुढलाडिया 15 सालों से लगातार 5 बार श्रीराम सेवा समिति के प्रधान चुने गए हैं। उनके कार्यकाल को स्वर्णिम कार्यकाल के रूप में माना जा रहा है। इसके पीछे वजह साफ है कि इन 15 सालों में संस्था की लगातार बढ़ती साख के पीछे उनकी कड़ी मेहनत है। इन 15 सालों में श्रीराम सेवा समिति अनाज मण्डी धर्मशाला में वातानुकूलित हाल सहित कई वातानुकूलित कमरे बनाए गए।

श्री राम सेवा समिति चिल्ली वाली रामलीला का शुभारंभ 14 से

फतेहाबाद। शहर की ऐतिहासिक श्री राम सेवा समिति चिल्ली वाली रामलीला का शुभारंभ 14 अक्टूबर बुधवार से होने जा रहा है। इस बार रामलीला का मंचन 20 अक्टूबर विजयदशमी तक किया जाएगा। वर्षों से चली आ रही इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा ने शहर की आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता को सहेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रामलीला के सह निर्देशक शंकर बंसल ने बताया कि रामलीला के शुभारंभ अवसर पर अग्रवाल सभा के संरक्षक देवी दयाल तायल मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे।

एक पन्ने की वित्तीय योजना से बिखरे पैसे को दें सही दिशा

▶▶ कमाई आते ही तय करें किस हिस्से से खर्च, सुरक्षा, कर्ज और निवेश ▶▶ छोटी लेकिन स्पष्ट योजना लंबे समय में बना सकती है बड़ा कोष ▶▶ बीमा, आपातकालीन निधि, कर्ज और निवेश का तय करें क्रम ▶▶ हर महीने आय आते ही पैसा अपने लक्ष्य के अनुसार ही करें आवंटित

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

कमाई अच्छी होने के बावजूद कई लोगों की आर्थिक स्थिति इसलिए मजबूत नहीं हो पाती, क्योंकि उनका पैसा अलग-अलग जगह बिखरा रहता है। किसी बैंक खाते में कुछ रकम, कहीं बीमा पॉलिसी, क्रेडिट कार्ड का बकाया, किसी म्यूचुअल फंड में छोटी-सी राशि और थोड़ी बचत घर में... लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कुल संपत्ति कितनी है और किस लक्ष्य के लिए कितना पैसा जमा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जरूरत निवेश के नए विकल्प तलाशने की नहीं, बल्कि पहले से मौजूद पैसों को व्यवस्थित करने की होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कोई जटिल वित्तीय योजना बनाई जाए। एक पन्ने पर आय, खर्च, कर्ज, सुरक्षा और निवेश की पूरी तस्वीर लिखना भी काफी मददगार हो सकता है। इस योजना का मकसद यह तय करना है कि कमाई खाते में आते ही पैसा कहां और कितना जाएगा, ताकि खर्च के बाद जो बचे उसी से निवेश करने की आदत न बने।

पहला कदम : आर्थिक सुरक्षा मजबूत करें

निवेश शुरू करने से पहले वित्तीय सुरक्षा की नींव मजबूत करना जरूरी है। यदि परिवार में आपकी आय पर दूसरे सदस्य निर्भर हैं तो पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा और जरूरत के अनुसार टर्म जीवन बीमा पर ध्यान देना चाहिए। बीमा का उद्देश्य निवेश से कमाई करना नहीं, बल्कि अचानक आने वाले बड़े आर्थिक संकट से परिवार को बचाना है। इसी तरह कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी घरेलू खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखना उपयोगी है। इसे ऐसे साधन में रखा जाना चाहिए, जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से उपलब्ध हो। इस पैसे को शेयर बाजार में लगाकर ज्यादा रिटर्न कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

दूसरा कदम : महंगे कर्ज से पहले छुटकारा

अगर क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत ऋण या किसी तत्काल ऋण पर बहुत ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है तो निवेश बढ़ाने से पहले ऐसे कर्ज को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। मसलन, क्रेडिट कार्ड का बकाया लंबे समय तक छोड़ने पर ब्याज तेजी से बढ़ सकता है। ऐसे कर्ज के रहते बाजार में निवेश करके ज्यादा रिटर्न कमाने की उम्मीद करना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं। सामने बकाया रकम, ब्याज दर और हर महीने की किस्त लिखें। ज्यादा ब्याज वाले असुरक्षित कर्ज को पहले चुकाने की कोशिश करें।



हर महीने नहीं, समय समय पर करें समीक्षा

वित्तीय योजना का मतलब रोज शेयर बाजार देखना या बार-बार निवेश बदलना नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लंबी अवधि के निवेशक के लिए अनुशासन और निरंतरता ज्यादा महत्वपूर्ण है। हां, आय बढ़ने, नौकरी बदलने, शादी, बच्चे होने, घर खरीदने या बड़े कर्ज जैसी परिस्थितियों में योजना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए।

तीसरा कदम : लक्ष्यों के हिसाब से करें निवेश

सारी बचत को एक ही जगह लगाना सही रणनीति नहीं है। पहले यह तय करें कि पैसा कब चाहिए। पांच साल से कम अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बहुत ज्यादा जोखिम वाले निवेश से बचना बेहतर है। वाहन खरीदना, घर की मरम्मत, बच्चों की निकट अवधि की फीस या अन्य जरूरी खर्च इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए सुरक्षित बचत विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। वहीं 10 साल या उससे अधिक अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति, बच्चों की उच्च शिक्षा या लंबे समय में संपत्ति बनाने जैसे लक्ष्यों के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड या व्यापक बाजार सूचकांक आधारित फंड विकल्प हो सकते हैं। हालांकि निवेश का चुनाव व्यक्ति की जोखिम क्षमता, उम्र, आय और लक्ष्य के अनुसार होना चाहिए।

चौथा कदम : निवेश को अपने आप चलने दें

वित्तीय योजना तभी सफल होती है जब उसे नियमित रूप से लागू किया जाए। इसके लिए एसआईपी जैसी स्वचालित व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। वेतन या आय खाते में आते ही निर्धारित रकम निवेश के लिए अलग हो जाए तो महीने के अंत में बची रकम निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। मान लीजिए किसी व्यक्ति की मासिक आय 60 हजार रुपये है। वह जरूरी खर्च और सुरक्षा की रकम तय करने के बाद 10 हजार रुपये लंबे समय के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहता है। यदि हर महीने एक निश्चित तारीख को यह रकम स्वतः निवेश हो जाए तो बाजार की रोजाना की खबरों या मूड के आधार पर निवेश रोकने की संभावना कम होगी।

5वां कदम : लिखें पूरी तस्वीर

- मासिक आय : कितनी रकम हाथ में आती है।
- जरूरी खर्च : घर चलाने में कितना खर्च होता है।
- कर्ज : कितना बकाया है और ब्याज।
- आपातकालीन निधि : कितनी रकम अलग रखी।
- बीमा : स्वास्थ्य और जीवन बीमा कितना है।
- निवेश : हर महीने कितनी रकम और किस लक्ष्य के लिए निवेश होगी।
- लक्ष्य : अगले 3, 5, 10 और 20 साल में किन जरूरतों के लिए पैसा चाहिए।
- एक पन्ने से व्यक्ति को हर माह यह समझने में आसानी होगी कि उसकी आय कहां जा रही है व भविष्य के लिए कितना पैसा तैयार हो रहा है।

पुराने खातों और निवेश की भी करें सफाई

कई लोगों के पास जरूरत से ज्यादा बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड और छोटे-छोटे निवेश होते हैं। समय-समय पर इनकी समीक्षा करनी चाहिए। जिन खातों या कार्ड का उपयोग नहीं हो रहा है, उनकी जरूरत और शुल्क की जांच करें। अलग-अलग निवेशों की सूची बनाकर देखें कि कहीं एक ही तरह के कई उत्पाद तो नहीं हैं। साथ ही बैंक खाते, बीमा, म्यूचुअल फंड, शेयर और अन्य वित्तीय निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। परिवार में किसी अनहोनी की स्थिति में यह छोटी-सी सावधानी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पैसा बचाना ही पर्याप्त नहीं, उसे सही दिशा देना जरूरी

एक अच्छी वित्तीय योजना वह नहीं जिसमें सबसे ज्यादा निवेश उत्पाद हों, बल्कि वह है जिसमें हर रुपये की भूमिका स्पष्ट हो। पहले सुरक्षा, फिर महंगे कर्ज से मुक्ति और उसके बाद लक्ष्य आधारित निवेश—यह सरल क्रम आर्थिक अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में मदद कर सकता है। योजना एक बार बनाकर भूलने के बजाय साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें। धीरे-धीरे आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम बढ़ाते रहें। यही अनुशासन लंबे समय में छोटी बचत को बड़ा वित्तीय सहारा बना सकता है।

30 की उम्र में निवेश शुरू कर रहे हैं तो पहले साल ऐसे बनाएं मजबूत आधार

- पहले आपातकालीन निधि और महंगे कर्ज से निपटें
- लक्ष्य के हिसाब से बचत और निवेश करना शुरू करें
- लंबी अवधि के लिए एसआईपी और सूचकांक फंड बेहतर विकल्प

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आपकी उम्र 30 साल है और आपने अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है तो घबराने की जरूरत नहीं है। इस उम्र में आपके पास लंबी अवधि का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त समय है। हालांकि निवेश की शुरुआत किसी खास शेयर या म्यूचुअल फंड को चुनने से नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति समझने से होनी चाहिए। पहले साल का लक्ष्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसी वित्तीय व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए जिसे आने वाले वर्षों में आसानी से जारी रखा जा सके। निवेश शुरू करने से पहले तीन सवालों के जवाब तलाशें-पैसा किस लक्ष्य के लिए चाहिए, कब चाहिए और बाजार में गिरावट आने पर आप कितना जोखिम उठा सकते हैं। इसके आधार पर ही निवेश की दिशा तय होगी।

सबसे पहले बनाएं आपातकालीन निधि

यदि आपके पास बचत नहीं है और क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण जैसा महंगा कर्ज चल रहा है तो पहले साल का पूरा ध्यान निवेश बढ़ाने के बजाय वित्तीय आधार मजबूत करने पर होना चाहिए। कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि में रखना उपयोगी है। नौकरी जाने, बीमारी, अचानक बड़े खर्च या किसी अन्य आपात स्थिति में यही रकम काम आएगी। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला जा सके। आपातकालीन निधि बनने के बाद ही लंबी अवधि के निवेश को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।



महंगे कर्ज को निवेश से पहले खत्म करें

क्रेडिट कार्ड का बकाया या ज्यादा ब्याज वाला व्यक्तिगत ऋण आपकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं और ब्याज दर देखें। ज्यादा ब्याज वाले कर्ज को पहले चुकाना बेहतर है। कर्ज खत्म होने के बाद उसकी मासिक किस्त के बराबर रकम को निवेश में लगाया जा सकता है। इस तरह कर्ज चुकाने की आदत सीधे निवेश की आदत में बदल सकती है।

हर लक्ष्य की तय करें समय सीमा

निवेश का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि पैसा कब चाहिए। तीन साल के भीतर जरूरत पड़ने वाली रकम को शेयर बाजार जैसे उतार-चढ़ाव वाले साधनों में लगाने से बचना चाहिए। कार खरीदना, शादी, घर की शुरुआती रकम या निकट अवधि की शिक्षा जैसे लक्ष्य इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए बैंक सावधि जमा, आवर्ती जमा या अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि लक्ष्य 10, 15 या 20 साल दूर है तो बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति या बच्चे की उच्च शिक्षा जैसे लंबे लक्ष्यों में महंगाई को ध्यान में रखना जरूरी है।

शुरुआती निवेशक के लिए सूचकांक फंड सरल विकल्प

लंबी अवधि के निवेश की शुरुआत करने वाले निवेशक के लिए व्यापक बाजार सूचकांक पर आधारित म्यूचुअल फंड एक सरल विकल्प हो सकता है। ऐसे फंड किसी प्रमुख सूचकांक की कंपनियों में निवेश करते हैं। इससे एक ही कंपनी पर निर्भरता कम होती है और निवेशक को अलग-अलग शेयर चुनने की जरूरत नहीं पड़ती। हालांकि इक्विटी आधारित निवेश में बाजार जोखिम रहता है। इसलिए इसका इस्तेमाल उन्हीं लक्ष्यों के लिए करना चाहिए जिनकी समय सीमा लंबी हो।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए रोहन की उम्र 30 साल है और उसे हर महीने कर कटौती के बाद 80 हजार रुपये मिलते हैं। उसके पास पहले से आपातकालीन निधि है। वह दो साल बाद कार खरीदना चाहता है और साथ ही सेवानिवृत्ति के लिए भी निवेश शुरू करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमता के अनुसार, उदाहरण के तौर पर, हर महीने 15 हजार रुपये कार के लक्ष्य के लिए सुरक्षित बचत में और 15 हजार रुपये लंबी अवधि के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड की एसआईपी में लगा सकता है। इस तरह दोनों लक्ष्यों का पैसा अलग रहेगा। कार के लिए रखा पैसा बाजार की गिरावट से प्रभावित नहीं होगा और सेवानिवृत्ति के लिए किया गया निवेश लंबे समय तक बढ़ने का अवसर पाएगा।

जोखिम क्षमता भी समझें

सिर्फ यह देखकर निवेश न करें कि कोई फंड या शेयर पिछले साल कितना बढ़ा। पहले यह समझें कि बाजार में 20-30 प्रतिशत गिरावट आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी। मान लीजिए आपने 10 हजार रुपये निवेश किए और कुछ समय बाद उसकी कीमत घटकर 8 हजार रुपये रह गई। यदि इससे आप घबरा कर निवेश बेच देंगे तो इक्विटी निवेश आपके लिए कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप उतार-चढ़ाव को स्वीकार कर लंबे समय तक निवेश बनाए रख सकते हैं तो आपकी जोखिम क्षमता ज्यादा हो सकती है। यानी निवेश का चुनाव केवल रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि लक्ष्य और जोखिम क्षमता देखकर करें।

बचत को हर माह की आदत बनाएं

- सबसे कम कमाई वाले महीने को आधार बनाएं
- वेतन आते ही बचत अलग खाते में डालें
- पहले तैयार करें अपने लिए आपातकालीन कोष
- लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार

योजना
बिजनेस डेस्क

कई लोगों की कमाई हर महीने एक जैसी नहीं होती। कभी बोनस मिल जाता है तो कभी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। ऐसे अच्छे महीने में बचत भी बढ़ जाती है, लेकिन अचानक आया बड़ा खर्च या कम आय वाला महीना पूरी बचत खत्म कर देता है। नतीजा यह होता है कि कई साल कमाने के बाद भी व्यक्ति के पास आपात स्थिति के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती। समस्या हमेशा कम कमाई नहीं होती, बल्कि नियमित बचत के लिए तय व्यवस्था का अभाव भी इसका बड़ा कारण है। वित्तीय मजबूती के लिए बचत को महीने के अंत में बची रकम पर निर्भर करने के बजाय इसे कमाई का पहला काम बनाना जरूरी है। यानी पैसा आते ही बचत की रकम अलग और उसके बाद खर्च। यही छोटी आदत लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार कर सकती है।

पहले समझें, बचत क्यों नहीं हो रही

बचत शुरू करने से पहले यह पता लगाना जरूरी है कि पैसा बच क्यों नहीं रहा। कुछ लोगों की आय हर महीने बदलती है। स्वतंत्र काम करने वाले, कमीशन पर काम करने वाले या कारोबार से जुड़े लोगों के लिए एक महीने की आय दूसरे महीने से काफी अलग हो सकती है। दूसरी समस्या यह है कि बचत का इरादा तो होता है, लेकिन हर महीने कोई न कोई खर्च उसे पीछे धकेल देता है। कई लोग सोचते हैं कि महीने के अंत में जो रकम बचेगी, उसे बचा लेंगे। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बहुत कम रकम बचती है। इसलिए बचत के लिए इच्छा नहीं, व्यवस्था बनाना जरूरी है।

3 माह की आय से तय करें अपना बजट

सबसे पहले पिछले तीन महीनों की कुल आय देखें और उसका औसत निकालें। लेकिन यदि आय में काफी उतार-चढ़ाव रहता है तो औसत आय के बजाय सबसे कम आय वाले महीने को अपना बजट आधार बनाना ज्यादा सुरक्षित हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को तीन महीनों में 40 हजार, 48 हजार और 35 हजार रुपये मिले। औसत आय करीब 41 हजार रुपये बैठती है, लेकिन बजट 35 हजार रुपये की सबसे कम आय को आधार मानकर बनाया जा सकता है। इससे कम आय वाले महीने में भी जरूरी खर्च पूरे करने में परेशानी नहीं होगी। अब इसमें से किराया, राशन, बिजली-पानी, आने-जाने और अन्य जरूरी खर्च अलग करें।



वेतन आते ही पहले बचत करें

नियमित वेतन पाने वालों के लिए सबसे आसान तरीका है—पहले खुद को भुगतान करें। मान लीजिए आपकी मासिक आय 40 हजार रुपये है और आप हर महीने 5 हजार रुपये बचाना चाहते हैं। वेतन खाते में आते ही 5 हजार रुपये दूसरे खाते में स्वतः स्थानांतरित करने की व्यवस्था कर दें। इसके बाद बचे पैसे से महीने का खर्च चलाएं। इसका फायदा यह है कि बचत की रकम खर्च करने वाले खाते में पड़ी ही नहीं रहेगी। बचत को इच्छाशक्ति के भरोसे रखने के बजाय स्वचालित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जा सकता है।

आय तय नहीं तो प्रतिशत के हिसाब से बचाएं

यदि कमाई हर महीने अलग है तो निश्चित रकम बचाने के बजाय आय का एक तय प्रतिशत अलग करना बेहतर हो सकता है। उदाहरण के लिए हर भुगतान का 15 से 20 प्रतिशत बचत खाते में डालने का नियम बनाया जा सकता है। मान लीजिए किसी स्वतंत्र पेशेवर की मासिक आय 25 हजार से 60 हजार रुपये के बीच रहती है। वह हर भुगतान का 18 प्रतिशत बचत के लिए अलग करता है। इस तरह कम आय वाले महीने में बचत की रकम कम होगी और ज्यादा कमाई होने पर बचत अपने आप बढ़ जाएगी।

बचत के लिए अलग खाता रखें

बचत और रोजमर्रा के खर्च का पैसा एक ही खाते में रखने से अनजाने में बचत खर्च होने की संभावना रहती है। इसलिए बचत के लिए अलग बैंक खाता रखना उपयोगी हो सकता है। संभव हो तो इसे रोजमर्रा के खाते से अलग बैंक में रखें। बोनस, कर वापसी या अचानक मिली अतिरिक्त रकम का एक हिस्सा सीधे इसी खाते में डाल सकते हैं।

पहले आपातकालीन कोष, बाद में ज्यादा रिटर्न

बचत का पहला उद्देश्य हर बार ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं होना चाहिए। पहले ऐसा आपातकालीन कोष तैयार करें जिससे अचानक आने वाले खर्च के समय निवेश या कर्ज पर निर्भरता कम हो। नियमित वेतन वालों के लिए तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर आपातकालीन निधि एक अच्छा आधार हो सकती है। वहीं जिनकी आय में ज्यादा उतार-चढ़ाव रहता है, वे छह से नौ महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम रखने पर विचार कर सकते हैं। यह रकम ऐसे विकल्प में रखी जानी चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो। आपातकालीन निधि का पहला उद्देश्य सुरक्षा और तरलता है, अधिकतम रिटर्न नहीं।

योजना बनाकर भूल जाना भी ठीक नहीं

बचत की योजना बनाकर उसे भूल जाना भी सही नहीं है। महीने में केवल 15 मिनट निकालकर देखें कि आय कितनी रही, जरूरी खर्च कितना हुआ और तय बचत लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं। यदि किराया बढ़ गया, परिवार में नया खर्च जुड़ गया या आय में बदलाव हुआ है तो बचत लक्ष्य में भी बदलाव किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बचत पूरी तरह बंद न हो।

इन पांच गलतियों से बचें

- महीने के अंत में बचतः तब तक पैसा खत्म हो सकता है।
- एक ही खाते में बचत और खर्चः बचत अनजाने में खर्च हो सकती है।
- सिर्फ अच्छे महीने में बचतः इससे नियमित आदत नहीं बनती।
- बिना बजट तय किए रकम निर्धारित करनाः लक्ष्य आपकी वास्तविक आय से मेल खाना चाहिए।
- योजना की समीक्षा न करनाः आय और खर्च बदलने के साथ बजट भी बदलना चाहिए।

निवेश से पहले बचत की मजबूत नींव जरूरी

शेयर, म्यूचुअल फंड या किसी अन्य निवेश में पैसा लगाने से पहले नियमित बचत की आदत और आपातकालीन निधि तैयार करना जरूरी है। कम रकम से शुरुआत करना कोई समस्या नहीं है। महीने में 500 रुपये भी नियमित रूप से बचाना उस महीने हजारों रुपये बचाकर अगले महीने फिर शून्य पर पहुंचने से बेहतर है।

अलर्ट 3 से 10 साल की अवधि में निवेश करने का बेहतीन विकल्प, लक्ष्य के हिसाब से तय होगी मासिक किस्त, तैयार होगा फंड

बच्चे के नाम हर महीने बचत, तैयार होगा एक लाख का फंड एसबीआई की 'हर घर लखपति' आरडी में 6.7% सालाना ब्याज

समझदारी
बिजनेस डेस्क

बच्चे की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या भविष्य की किसी बड़ी जरूरत के लिए समय रहते बचत शुरू करना समझदारी है। ऐसे में अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव से अलग रहकर हर महीने एक निश्चित रकम जमा करना चाहते हैं, तो भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई की 'हर घर लखपति' योजना एक विकल्प हो सकती है। यह कोई अलग निवेश उत्पाद नहीं, बल्कि रिकरिंग डिपॉजिट यानी आरडी का एक रूप है। इसमें निवेशक हर महीने एक तय रकम जमा करता है और तय अवधि पूरी होने पर जमा रकम के साथ ब्याज मिलता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना में फिलहाल 6.7% सालाना ब्याज मिल रहा है। निवेश की अवधि 3 साल से 10 साल तक रखी जा सकती है। यानी अभिभावक बच्चे की उम्र और भविष्य के लक्ष्य के हिसाब से अवधि चुन सकते हैं।

क्या है 'हर घर लखपति' योजना?

नाम से लग सकता है कि यह कोई अलग सरकारी योजना है, लेकिन वास्तव में यह एसबीआई की आरडी आधारित सुविधा है। इसका उद्देश्य नियमित बचत के जरिए एक तय लक्ष्य राशि तैयार करना है। इसे सामान्य आरडी की तरह समझ सकते हैं, जिसमें हर महीने एक निश्चित राशि जमा करनी होती है। मसलन, अगर अभिभावक बच्चे के लिए हर महीने थोड़ी रकम अलग रखते हैं तो कुछ वर्षों में यह रकम ब्याज के साथ एक बड़े फंड में बदल सकती है।

3 से 10 साल तक निवेश

इस योजना में 3 साल से 10 साल तक की अवधि चुनी जा सकती है। अवधि का चुनाव बच्चे की जरूरत के हिसाब से करना महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पांच साल बाद रकम चाहिए तो पांच साल की अवधि वाला लक्ष्य बनाया जा सकता है। अगर जरूरत 10 साल बाद है तो लंबी अवधि का विकल्प चुना जा सकता है। हालांकि निवेश की अवधि तय करते समय यह भी देखना चाहिए कि बीच में पैसों की जरूरत पड़ सकती है या नहीं। समय से पहले आरडी बंद करने पर बैंक के नियम लागू हो सकते हैं।



बच्चे के नाम पर खाता कैसे खुलेगा?

इस योजना में कोई व्यक्ति सिंगल या जॉइंट अकाउंट खोल सकता है। 10 साल से अधिक उम्र के बच्चे के नाम पर भी खाता खोला जा सकता है, लेकिन इसके लिए बच्चे का ठीक से हस्ताक्षर करने में सक्षम होना जरूरी है। यदि बच्चा हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं है तो उसके नाम पर खाता माता-पिता या अभिभावक के साथ खोला जा सकता है। यानी बच्चे की उम्र और उसकी हस्ताक्षर करने की क्षमता के आधार पर खाते का संचालन तय होगा।

1 लाख रुपये का लक्ष्य कैसे पूरा होगा?

अगर आपका लक्ष्य बच्चे के लिए 5 साल में 1 लाख रुपये का फंड तैयार करना है तो उपलब्ध गणना के अनुसार हर महीने करीब 1,420 रुपये जमा करने होंगे। इसी तरह यदि आप 10 साल में 1 लाख रुपये का लक्ष्य रखते हैं तो मासिक जमा करीब 610 रुपये होगी। इससे यह समझना आसान है कि लंबी अवधि चुनने पर मासिक बचत का बोझ कम हो सकता है। हालांकि इन आंकड़ों को उदाहरण के रूप में देखना चाहिए। वास्तविक मासिक किस्त बैंक की लागू ब्याज दर, आरडी की शर्तों और गणना पद्धति के अनुसार बदल सकती है।

लक्ष्य बढ़ाएं तो किस्त भी बढ़ेगी

इस योजना में लक्ष्य केवल 1 लाख रुपये तक सीमित नहीं है। निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख रुपये या उससे अधिक का लक्ष्य भी निर्धारित कर सकता है। लक्ष्य राशि बढ़ने के साथ मासिक किस्त भी बढ़ेगी। मसलन, जिस परिवार को बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये का फंड बनाना है, वह छोटी अवधि के बजाय लंबी अवधि चुनकर मासिक निवेश का बोझ कम रखने की कोशिश कर सकता है।

छोटी बचत से बड़ा लक्ष्य

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा अनुशासित बचत है। अक्सर परिवार एकमुश्त रकम बचाने की योजना तो बनाते हैं, लेकिन नियमित रूप से पैसा अलग नहीं रख पाते। आरडी में हर महीने तय रकम जमा करने की व्यवस्था होने के कारण बचत की आदत बन सकती है। मान लीजिए परिवार हर महीने करीब 600 रुपये अलग रखता है। यह रकम रोजाना के खर्च में बहुत बड़ी नहीं लगती, लेकिन लंबे समय तक लगातार जमा होने पर ब्याज के साथ एक निश्चित फंड तैयार कर सकती है।

सिर्फ ब्याज देखकर फैसला न करें

हालांकि 6.7% ब्याज आकर्षक लग सकता है, लेकिन निवेश का फैसला केवल ब्याज दर देखकर नहीं करना चाहिए। अभिभावकों को यह भी देखना चाहिए कि बच्चे का लक्ष्य कितने साल बाद है, कितनी रकम की जरूरत होगी और महंगाई के कारण भविष्य में उस लक्ष्य की लागत कितनी बढ़ सकती है। मसलन, आज उच्च शिक्षा पर 5 लाख रुपये खर्च हो रहे हैं तो 8-10 साल बाद यही खर्च काफी अधिक हो सकता है। इसलिए लंबे समय के लक्ष्य के लिए केवल आरडी पर निर्भर रहने के बजाय अन्य निवेश विकल्पों से भी इसकी तुलना करनी चाहिए।

टैक्स और समय से पहले निकासी के नियम भी समझें

आरडी में मिलने वाला ब्याज कर नियमों के दायरे में आ सकता है। इसलिए बड़ी रकम जमा करने से पहले अपनी कर स्थिति के अनुसार जानकारी लेना जरूरी है। इसी तरह अगर बीच में पैसे की जरूरत पड़ती है तो समय से पहले आरडी बंद करने या आंशिक निकासी से जुड़े बैंक के नियम लागू हो सकते हैं। निवेश शुरू करने से पहले एसबीआई की मौजूदा ब्याज दर, आरडी की शर्तें, नाबालिग के खाते के नियम और समय से पहले खाता बंद करने के प्रावधान जरूर जांच लें।

ऐसे समझें योजना

- योजनाः एसबीआई 'हर घर लखपति'
- प्रकारः रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
- ब्याज दर 6.7% सालाना
- अवधि 3 से 10 साल
- 5 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 1,420 रुपये मासिक
- 10 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 610 रुपये मासिक
- लक्ष्य 1 लाख से अधिक भी
- खाता सिंगल या जॉइंट
- बच्चे के नाम खाता 10 साल से अधिक उम्र में, शर्तों के अनुसार
- कम उम्र/हस्ताक्षर में असमर्थ बच्चा माता-पिता/अभिभावक के साथ
- ब्याज दर और बैंक के नियम समय के साथ बदल सकते हैं।

खबर संक्षेप

महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह 18 को

फतेहाबाद। अग्रवाल समाज फतेहाबाद द्वारा 18 अक्टूबर रविवार को महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह अत्यंत धूमधाम व श्रद्धा के साथ आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता अग्रवाल समाज के प्रधान मनोज गर्ग बड़ोपलिया करेंगे। जयंती समारोह के अवसर पर विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। प्रेस सचिव अनिल गोयल ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अनिल गोयल, डायरेक्टर क्यूबस लाइफस्पेसिस, उद्योगपति अशोक बंसल नाभा वाले, अजय जिंदल, जिंदल राइस मिल और सतीश गोयल शिरकत करेंगे।

चोरी का आरोपी गिरफ्तार बाइक और गहने बरामद

फतेहाबाद। एंटी व्हीकल थेफ्ट स्टाफ फतेहाबाद की टीम ने गांव दरियापुर स्थित ढाणी शेखों वाली में एक बंद मकान के ताले तोड़कर चोरी करने के मामले में नामजद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान सेंटी पुत्र रूड़ा राम निवासी ढाणी शेखों वाली, गांव दरियापुर के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरीशुदा मोटरसाइकिल, एक हेलमेट, सोने की कान की बाली तथा चांदी व गिल्ट के आभूषण बरामद कर लिए है। एवीटी स्टाफ फतेहाबाद के निरीक्षक कुलदीप कुमार ने बताया कि ढाणी शेखों वाली निवासी जसबीर सिंह ने थाना सदर फतेहाबाद में शिकायत दी थी।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत कार्यक्रम

एमएम कॉलेज में विद्यार्थियों ने लिया नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत एमएम कॉलेज में जिला नागरिक अस्पताल के सहयोग से मानसिक स्वास्थ्य एवं नशामुक्ति को लेकर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'मन जागृति' अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम का संयोजन कालेज की एनएसएस यूनिट द्वारा डॉ. विकेश सेठी व प्रो. प्रतिभा मखीजा के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कालेज प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास ने की, जबकि स्वास्थ्य विभाग की ओर से उप सिविल सर्जन एवं मनोचिकित्सक डॉ. गिरिश कुमार एवं क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट डॉ. गविन्द्र कौर ने मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की।

मुख्य वक्ता उप सिविल सर्जन डॉ. गिरिश कुमार ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों और मानसिक स्वास्थ्य के संबंध के प्रति जागरूक करते हुए कहा, नशा न केवल व्यक्ति के शरीर को खोखला करता है, बल्कि उसके मानसिक संतुलन, परिवार और भविष्य को भी पूरी तरह तबाह कर देता है। युवा शक्ति को भ्रमित होने से बचाना और उन्हें नशे के जाल से निकालना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। मानसिक रूप से मजबूत व्यक्ति कभी नशे का सहारा नहीं लेता, इसलिए किसी भी प्रकार के तनाव में नशे से दूर रहकर सही मार्गदर्शन लें। वहीं डॉ. गविन्द्र कौर ने भी मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने के व्यावहारिक उपाय सांझा किए। प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास ने अतिथियों का स्वागत किया।



फतेहाबाद। एमएम कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. गिरिश।

छात्र ने नशामुक्ति विषय पर गीत गाया

कार्यक्रम के दौरान बीए द्वितीय वर्ष के छात्र सारंग ने नशामुक्ति विषय पर संदेशप्रद गीत की प्रस्तुति दी। इसके उपरांत, उपस्थित सभी विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों को स्वयं नशा न करने और समाज में दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक कर नशामुक्त समाज की स्थापना में अपना सक्रिय योगदान देने का सामूहिक संकल्प दिलवाया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों द्वारा कालेज परिसर एवं आसपास के क्षेत्रों में जागरूकता रैली भी निकाली गई, जिसमें हाथों में स्लोगन लिखी पट्टियां लेकर युवाओं ने आमजन को नशे से दूर रहने व मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने का संदेश दिया। मंच संचालन प्रो. तान्या मेहता द्वारा किया गया। इस अवसर पर कॉलेज स्टाफ से प्रो. सुशील दहिया, मंजू रानी, मंजू कड़वासरा, डॉ. भव्या मुखी, डॉ. ममता, रण सिंह, मुकेश, डॉ. अनिल शर्मा, नितिन सचदेवा, सावन, राजेश फोगाट, डॉ. कांता सहित अनेक प्राध्यापक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

क्रेसंट कॉलेज में नशामुक्त अभियान के तहत विद्यार्थियों को दिलवाई गई शपथ

फतेहाबाद। क्रेसंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, फतेहाबाद में सेवा मेरा योगदान के तहत विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने तथा स्वस्थ एवं नशामुक्त समाज के निर्माण का संदेश देने के उद्देश्य से 'नशा मुक्त भारत अवेयरनेस' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक नुकसान के बारे में जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को समझाया गया कि नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उसके परिवार, शिक्षा, करियर और सामाजिक जीवन पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने नशे से दूर रहने, स्वयं जागरूक बनने तथा समाज में भी नशामुक्ति का संदेश फैलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करना रहा। प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. हरी राम ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि युवा देश की सबसे बड़ी शक्ति हैं। यदि युवा नशे से दूर रहकर अपने लक्ष्य, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दें, तो एक स्वस्थ, सशक्त एवं नशामुक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है।


फतेहाबाद। क्रेसंट कॉलेज ऑफ एजुकेशन में नशे न करने का शपथ लेते विद्यार्थी।


फतेहाबाद। यूएसए अध्यक्ष बने बृजभूषण मिढ़ा को बधाई देते ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी के पदाधिकारी। *फोटो : हरिभूमि*

बृजभूषण बने यूएसए के अध्यक्ष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

- ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी की बैठक

ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी की बैठक का आयोजन अनाज मंडी स्थित कार्यालय में किया गया। बैठक में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सूर्यवंशी साहिब दयाल वधवा और प्रदेश अध्यक्ष ओम प्रकाश चुघ ने मुख्य अतिथि के रूप में विशेष तौर पर शिरकत की। इस दौरान समुदाय के उत्थान, संगठन की मजबूती और इसके विस्तार को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक का मुख्य आकर्षण ऑल इंडिया अरोड़ा खत्री पंजाबी कम्युनिटी का विदेशों में हुआ और अधिक विस्तार रहा। इस अवसर पर घोषणा की गई कि फतेहाबाद निवासी बृजभूषण मिढ़ा को यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इसके अलावा जिला व्यापार प्रकोष्ठ के अंतर्गत राजकुमार चुघ को उपाध्यक्ष और मनमोहन मिड्ढा को मुख्य सलाहकार की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

नुक्कड़ नाटक से समझाया एंटी बायोटिक का उपयोग



सिरसा। आज स्थानीय लार्ड शिवा कालेज आफ फार्मेसी के विद्यार्थीयों ने बिना परामर्श एंटी बायोटिक के उपयोग पर जे.जे. कॉलोनी में एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से विद्यार्थीयों ने बताया कि आज के युग में ज्यादातर लोग बिना डाक्टर के परामर्श के अपनी स्वेच्छा से एंटी बायोटिक दवाओं का उपयोग करते है जिसका दुषप्रभाव उनके शरीर पर होता है। कॉलेज प्रवक्ता विष्णु शर्मा ने बताया कि बी.फार्मेसी कोर्स के छात्र-छात्राओं ने कड़ी मेहनत कर इस नुक्कड़ नाटक को तैयार किया ताकि आमजन को इस बारे अवगत कराया जा सके। विद्यार्थीयों का मनोबल बढ़ाने संस्था के प्रिंसिपल प्रो. जितेंद्र सिंह, वाईस प्रिंसिपल डॉ. जगतार सिंह, डॉ. प्रीति, सुधांशु पांडे, गजल मेहता, मनोज कुमार, दिक्षा कटारिया, भूपेंद्र, शुभम सचदेवा, हरविंद्र कौर, अमनदीप, पिंकी, सुरेंद्र, शालु सहित सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

मेघालय के पूर्व डीजीपी ने किया सैनिक स्कूल खारा खेड़ी का दौरा

एनडीए सफलता के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

गांव खाराखेड़ी स्थित सैनिक स्कूल में आज मेघालय के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. एलआर बिश्नोई ने दौरा किया। स्कूल निदेशिका डॉ. ज्योत्स्ना , स्कूल प्रशासक विक्रमादित्य एवं सैनिक स्कूल कमांडेंट कर्नल डॉ. डीवी नेहरा ने उनका स्वागत किया। उन्होंने विद्यालय परिसर का भ्रमण किया और कैडेट्स के सर्वांगीण विकास के लिए उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं एवं उत्कृष्ट आधारभूत संरचना की सराहना की। कैडेट्स को संबोधित करते हुए डॉ. बिश्नोई ने उन्हें राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ईमानदारी, समर्पण, अनुशासन और निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए लक्ष्य के प्रति एकाग्र रहना और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढऩा आवश्यक है। उन्होंने कैडेट्स को सभी प्रकार की बुरी आदतों, विशेषकर नशे से दूर रहने की सलाह दी तथा एक स्वस्थ, अनुशासित और जिम्मेदार जीवनशैली अपनाने पर बल दिया। अपने संबोधन के दौरान डॉ. बिश्नोई ने सिविल सेवा की तैयारी से जुड़े अपने अनुभव भी कैडेट्स के साथ साझा किए।


फतेहाबाद। विद्यार्थियो को संबोधित करते मेघालय के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. एलआर बिश्नोई। *फोटो : हरिभूमि*

लक्ष्य के प्रति समर्पण जरुरी : डॉ. बिश्नोई

उनके प्रेरणादायक विचारों ने कैडेट्स में अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और मेहनत की भावना को प्रोत्साहित किया। डॉ. बिश्नोई ने इस बात पर विशेष प्रसन्नता व्यक्त की कि विद्यालय में देश के 23 राज्यों से आए कैडेट्स शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न राज्यों और संस्कृतियों से आए विद्यार्थियों का एक साथ रहना और सीखना उनके व्यक्तित्व विकास, आपसी सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जनसंघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता ही भाजपा की मजबूत नींव : जोड़ा

फतेहाबाद। भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने जनसंघ के समय से संगठन से जुड़े वरिष्ठ एवं पुराने कार्यकर्ताओं के घर पहुंचकर उनसे मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने संगठन के नींव के पत्थर कहे जाने वाले ईश्वरदास मिढ़ा, मदन लाल गाबा, पूर्व विधायक बलबीर चौधरी के सुपुत्र रणबीर चौधरी, स्वर्गीय मेहरचंद गांधी के सुपुत्र रमेश गांधी तथा श्रीराम बांसल के सुपुत्र नरेश बंसल के निवास स्थान पर जाकर उनका आशीर्वाद लिया और उन्हें शॉल भेंट कर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने कार्यकर्ताओं के साथ पुराने समय की संगठनात्मक गतिविधियों, संघर्षों और अनुभवों पर विस्तार से चर्चा की। जिलाध्यक्ष प्रवीन जोड़ा ने कहा कि जनसंघ के समय से संगठन के लिए समर्पित रहे वरिष्ठ कार्यकर्ता भारतीय जनता पार्टी की असली नींव हैं।

अमारा ग्रीन व श्रीमत सिटी सेंटर ने किया सिरसा क्लब में एक्वा जुंबा का आयोजन

क्लब के सदस्यों ने जल क्रीड़ाओं का लिया आनंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

महानगरीय तर्ज पर शनिवार को सिरसा क्लब के पुल में एक्वा जुंबा का आयोजन किया गया, जिसमें सिरसा क्लब के सदस्यों ने जल क्रीड़ाओं का आनंद लिया। इस का आयोजन अमारा ग्रीन तथा श्रीमत सिटी सेंटर की ओर से किया गया। इस मौके पर मूवमेंट हाऊस की ओर से सदस्यों को वॉटर पुल में विविध खेल गतिविधियां करवाई गई। सिरसा क्लब के सदस्यों ने इसका जमकर लुत्फ उठाया। संगीत की धुन पर आयोजित खेल गतिविधियों का सभी ने कई घंटे तक आनंद उठाया।

श्रीमत टेक्सवर्थ प्रा. लिमिटेड के डायरेक्टर राजीव जैन, संजीव जैन एडवोकेट, माधव जैन ने सभी प्रतिभागियों का आभार जताया। वर्णनीय है कि वैदवाला रोड पर करीब 58 एकड़ में अमारा ग्रीन विकसित की जा रही है, जिसमें करीब 23 प्रतिशत में रिहायशी कालोनी होगी, जिसमें 358 रिहायशी प्लॉट है। कॉलोनी में करीब 40 प्रतिशत में औद्योगिक क्षेत्र बनाया जाएगा, जिसमें 146 इंडस्ट्रियल प्लॉट रखे गए हैं। दो प्रतिशत कमर्शियल एरिया होगा और शेष ग्रीन एरिया होगा। इसी प्रकार डबवाली रोड पर श्रीमत सिटी सेंटर में बहुमंजिला कमर्शियल-कम-रेजिडेंसियल मार्केट तैयार की जा रही है, इस मार्केट का डिजाइन विदेशी तर्ज पर है। यहां दो ओर बहुमंजिला दुकान व शोरूम के बीच 18 मीटर चौड़ी सडक़ बनाई गई है। इसका मुख्य प्रवेश द्वार श्री अरोड़वंश चौक से है, जबकि जबकि डबवाली रोड पर होटल अरोमा के सामने से भी एक प्रवेश द्वार है। श्रीमत सिटी सेंटर में कोन्पलेक्स का सिनेमा हॉल, मल्टी नेशनल कंपनी सुविधा का स्टोर, हल्दीराम तथा सुरक्षा मल्टी स्पेशिलिटी अस्पताल का निर्माण कार्य जारी है। इस मौके पर सिरसा क्लब के पूर्व वरिष्ठ उपप्रधान अनिल डूमरा, पूर्व कोषाध्यक्ष नकुल मोहंता, प्रो. रविंद्र पुरी, अभिषेक जैन एडवोकेट, राजेंद्र जिंदल, राकेश गोयल, रोहित जैन, वीरेंद्र महेश्वरी, सुरेंद्र साहुवाला, अनिल जैन सहित अनेक वरिष्ठ सदस्य उपस्थित थे।



सिरसा। एक्वा जुंबा प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।

अंडर-11 ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता शुरू



चौपटा। राजकीय कन्या प्राथमिक विद्यालय दड़बा कंला में शनिवार को अंडर-11 आयु वर्ग की ब्लॉक स्तरीय स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नाथूसरी चौपटा ब्लॉक की विभिन्न टीमों ने कबड्डी, खो-खो और एथलेटिक्स जैसे खेलों में अपना बेहतरीन दमखम दिखाया। उद्घाटन समारोह में खंड शिक्षा अधिकारी सतबीर ढिढारिया, ग्राम पंचायत सरपंच संतोष बेनीवाल और प्रिंसिपल कमलजीत ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। वहीं, खेलों के नोडल अधिकारी शीशपाल ढाका और डिप्टी नोडल अधिकारी दिनेश सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर खेलों का विधिवत उद्घाटन किया और बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें जीवन में खेलों के महत्व के बारे में बताया। प्रतियोगिता के अंतर्गत हुए कबड्डी मुकाबलों में जीपीएस नाथूसरी कलां की टीम ने शानदार खेल दिखाते हुए प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि जीपीएस बरासरी की टीम उपविजेता रही। इसके अतिरिक्त, 100 मीटर दौड़ और लंबी कूद में मेजबान जीपीएस दड़बा कंला के खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहद सराहनीय रहा। इस टूर्नामेंट को पूरी तरह से पारदर्शी और सुचारू रूप से संपन्न करवाने में खेल समिति का अहम योगदान रहा। इनमें मुख्य रूप से हनुमान, मुख्याध्यापक प्रदीप, बरासरी से पवन और अमर दीप, पवन ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शहीद बाबा दीप सिंह कॉलेज अहरवां में प्रतिभा खोज समारोह

विद्यार्थियों ने मंच पर बिखेरी चमक

फतेहाबाद। ग्रामीण एवं क्षेत्रीय युवाओं में छिपी नैसर्गिक प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें उचित मंच प्रदान करने के उद्देश्य से शहीद बाबा दीप सिंह शिक्षण महाविद्यालय, अहरवां में बीएड प्रथम वर्ष के नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए दो दिवसीय अंतर-महाविद्यालयीन प्रतिभा खोज समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ संस्था की चेयरपर्सन शरणजीत कौर, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की सदस्य डॉ. अनुराधा सिवाच, सचिव हरमीत सिंह तथा प्राचार्या डॉ. ममता चौधरी ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। दो दिवसीय इस आयोजन के दौरान विद्यार्थियों के बौद्धिक, कलात्मक एवं सांस्कृतिक कौशल को परखने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। भाषण, एकल व समूह नृत्य, गायन, रंगोली सज्जा एवं पोस्टर मेकिंग स्पर्धाओं में बी.एड. के भावी शिक्षकों ने अपनी रचनात्मकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।



प्रतिभागियों को किया सम्मानित

इन प्रतियोगिताओं में निष्पक्ष मूल्यांकन के लिए महाविद्यालय के वरिष्ठ प्रवक्ता रविकांत गर्ग एवं प्रवक्ता पूजा रानी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। भाषण प्रतियोगिता में कुलविंदर सिंह ने प्रथम, प्रदीप ने द्वितीय और पूजा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। नृत्य प्रतियोगिता में अनामिका पहले, सुमनप्रीत दूसरे और सुनीता तीसरे स्थान पर रहीं। रंगोली प्रतियोगिता में सुमनदीप कौर ने प्रथम, मोहित ने द्वितीय तथा ज्योति रानी ने तृतीय स्थान हासिल किया। वहीं पोस्टर मेकिंग स्पर्धा में ज्योति रानी प्रथम, सुनीता रानी द्वितीय और सुमनप्रीत तृतीय स्थान पर रहीं।

देविवि में 5 दिवसीय कार्यशाला संपन्न

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा के युवा कल्याण निदेशालय कार्यालय द्वारा संगीत, भांगड़ा, हरियाणवी नृत्य, कोरियोग्राफी, साहित्यिक एवं ललित कला विधाओं पर आयोजित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। विश्वविद्यालय के मल्टीपर्पज हॉल में आयोजित इस कार्यशाला में 500 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।समापन समारोह में विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.विजय कुमार ने कहा कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल प्रतिभा के बल पर सफलता प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि लक्ष्य के प्रति समर्पण, अनुशासन, निरंतर परिश्रम और अपनी क्षमताओं का सकारात्मक एवं सार्थक दिशा में उपयोग करना भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित कर पूरी निष्ठा और आत्मविश्वास के साथ आगे बढऩा चाहिए। कुलगुरु ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा पहचानने, नई संभावनाओं को तलाशने और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर परीक्षा नियंत्रक प्रोफेसर राजकुमार ने कहा की विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे अपनी ऊर्जा को अनावश्यक गतिविधियों में व्यर्थ करने के बजाय शिक्षा, खेल, शोध, रचनात्मक गतिविधियों तथा राष्ट्रनिर्माण के कार्यों में लगाएं।

रणधीर अध्यक्ष व राजविंदर महासचिव बने



फतेहाबाद। ऑल इंडिया लॉयर्स यूनियन हरियाणा के सातवें राज्य सम्मेलन में सर्वसम्मति से नई राज्य कार्यकारिणी का चुनाव किया गया। सम्मेलन में रणधीर सिंह को प्रदेश अध्यक्ष तथा राजविंदर सिंह चंदी को महासचिव निर्वाचित किया गया। इस दौरान स्वतंत्र एवं जवाबदेह न्यायपालिका, संविधान की सर्वोच्चता, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की रक्षा के लिए अधिवक्ता समुदाय को संगठित करने तथा संगठन को जिला, तहसील और न्यायालय स्तर तक मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। सम्मेलन में महिला अधिवक्ताओं को प्रत्येक मातृत्व अवसर पर पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता, युवा वकीलों के लिए सामाजिक सुरक्षा, हरियाणा के लिए अलग उच्च न्यायालय एवं अलग बार काउंसिल की स्थापना, एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने तथा दलित अधिवक्ताओं को उचित प्रतिनिधित्व देने संबंधी महत्वपूर्ण प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। सम्मेलन को संबोधित करते हुए एआईएलयू के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली उच्च न्यायालय के अधिवक्ता अनिल चौहान ने कहा कि स्वतंत्र, निष्पक्ष, निर्भीक, पारदर्शी और जवाबदेह न्यायपालिका लोकतंत्र की आधारशिला है। इस अवसर पर एआईएलयू नेता चांदी राम पातड़, चंद्रभान ढाका, रामचंद्र सिवाच, कमलेश वशिष्ठ, विनोद भारद्वाज, सोमदत्त शर्मा, शाहनवाज भट्टी, हिमांशु राज, मधु, रतिया बार एसोसिएशन के प्रधान वेद कंबोज, फतेहाबाद बार एसोसिएशन के प्रधान सुभाष जांगू आदि मौजूद रहे।

श्री रामा कृष्णा कला मंच की 75वीं रामलीला का शुभारंभ

आरती के साथ शुरू हुआ मंचन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भूना

रामलीला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि संस्कारों और जीवन मूल्यों की पाठशाला है। इसके माध्यम से नई पीढ़ी को मर्यादा, त्याग, भाईचारे और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे स्वयं रामलीला देखने के साथ अपने बच्चों को भी भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जोड़ें। यह बात भूना थाना प्रभारी कंवर सिंह ने श्री रामा कृष्णा कला मंच की ओर से आयोजित 75वीं रामलीला के शुभारंभ अवसर पर कही। कार्यस्त्रऽम की शुरुआत महर्षि वाल्मीकि की आरती के साथ हुई। इसके बाद पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि मेवा सिंह वाल्मीकि और थाना प्रभारी कंवर सिंह ने नारियल तोडक़र रामलीला का विधिवत शुभारंभ किया। थाना प्रभारी ने श्री रामा कृष्णा कला मंच के सदस्यों को रामलीला के 75वें आयोजन की बधाई देते हुए धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखने के उनके प्रयासों की सराहना की।


भूना। नारियल तोडक़र रामलीला का शुभारंभ करते अतिथिगण।

ये रहे उपस्थित

मंच के प्रधान हरविंदर मेहता, डायरेक्टर सुरेंद्र हंस, कोषाध्यक्ष सुनील खुराना,अजय मेहता ,इशू भूटानी, संजय मेहता, संजय गिरधर, सतीश बत्रा, मनोज कुमार, अंशुल खुराना, गौरव खुराना, मुंशी कंबोज, श्यामलाल कंबोज, इंद्रजीत कंबोज, शंटी रेहलन, अजीत रेवड़ी, मोहित नागपाल, पुनीत खट्टर, सुमित कुमार, कमल हलवाई, मेवा सिंह वाल्मीकि, फतेह सिंह नायक और सुगम वाल्मीकि सहित शहर के अनेक लोग मौजूद रहे।

डीएवी पुलिस स्कूल में लगाई विज्ञान एवं गणित प्रदर्शनी

विद्यार्थियों ने वैज्ञानिक सोच और नवाचार का किया प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल, फतेहाबाद में विज्ञान एवं गणित प्रदर्शनी का आयोजन उत्साह, उमंग और रचनात्मकता के साथ किया गया। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक चिंतन, गणितीय समझ तथा नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना था।

विद्यार्थियों ने विभिन्न आकर्षक एवं कार्यशील मॉडलों के माध्यम से अपनी प्रतिभा, कल्पनाशीलता और विषयों की व्यावहारिक समझ का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। इस अवसर पर डीएवी जोन की क्लस्टर हेड सुनीता मदान ने विशेष अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा निर्मित मॉडलों का अवलोकन किया तथा उनके प्रयासों, वैज्ञानिक सोच और रचनात्मकता की सराहना की।


फतेहाबाद। डीएवी पुलिस स्कूल में प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथिगण।

अनेक कार्यशील मॉडल किए प्रस्तुत

विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक पर आधारित अनेक कार्यशील मॉडल प्रस्तुत किए। इनमें चंद्रयान-3 का हाइड्रोलिक प्रेशर मॉडल, गुब्बारों एवं हाइड्रोलिक दबाव की सहायता से मानव हृदय की कार्यप्रणाली, सेंसर आधारित स्वचालित ब्रेकिंग सिस्टम, हाइड्रोलिक दबाव से संचालित रॉकेट लॉन्चर, अल्ट्रासाउंड तकनीक, सौर ऊर्जा से संचालित स्मार्ट बैग तथा हाइड्रोजन गैस स्टोव प्रमुख आकर्षण रहे। इन मॉडलों के माध्यम से विद्यार्थियों ने अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा तकनीक, सडक़ सुरक्षा तथा स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा के महत्त्व को सरल और रोचक ढंग से समझाया। गणित प्रदर्शनी में भी विद्यार्थियों ने अपनी विषयगत दक्षता का उत्कृष्ट परिचय दिया। बहुपदों के प्रकार, निर्देशांक ज्यामिति तथा पाइथागोरस प्रमेय पर आधारित मॉडलों और प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने गणितीय अवधारणाओं को सरल, स्पष्ट एवं व्यावहारिक रूप में प्रदर्शित किया। इन प्रस्तुतियों ने गणित को केवल पुस्तकीय विषय न मानकर दैनिक जीवन से जोडऩे का संदेश दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्या महिमा तनेजा ने विद्यार्थियों के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रदर्शनियां बच्चों में जिज्ञासा, तार्किक क्षमता, समस्या-समाधान कौशल तथा आत्मविश्वास का विकास करती हैं।

खबर संक्षेप

बाइक सवार युवक 7.50 ग्राम हेरोइन सहित काबू

सिरसा। सीआईए सिरसा पुलिस ने गांव पनिहारी क्षेत्र से बाइक सवार तीन युवकों को हजारों रुपए की 7 ग्राम 50 मिलीग्राम हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा पुलिस टीम के प्रभारी ने बताया कि सीआईए सिरसा पुलिस टीम गश्त करते हुए गांव पनिहारी की तरफ जा रही थी। इसी दौरान पुलिस पार्टी जब गांव पनिहारी के नजदीक पंहुची तो सामने से तीन युवक बाइक पर आते दिखाई दिए। आरोपियों की पहचान हर्ष निवासी गांव बिज्जुवाली, हरीश कुमार व गुरमीत सिंह निवासी गांव पनिहारी, जिला सिरसा के रूप में हुई है

पीएम मोदी के नेतृत्व में देश का हुआ विकास : प्रदीप

सिरसा। वरिष्ठ भाजपा नेता प्रदीप रातुसरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 25 वर्ष के नेतृत्व का सफर जनसेवा और विकास को समर्पित रहा है। शनिवार जारी बयान में रातुसरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2026 को सरकार के प्रमुख के रूप में अपने 25 वर्ष पूरे किए हैं। वर्ष 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शुरू हुआ उनका प्रशासनिक सफर वर्ष 2014 में देश के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी निरंतर जारी है।

जेल में बंदियों को लेखन सामग्री वितरित

सिरसा। सेवा संकल्प अभियान के तहत शनिवार को जिला जेल में उल्लास योजना के तहत परीक्षा पास करने वाले बंदियों को लेखन सामग्री में कॉपी, पेन, पेंसिल इत्यादि सरसाई नाथ बुक बैंक ट्रस्ट द्वारा वितरित की गई। इस अवसर पर जेल अधीक्षक जसवंत सिंह ने बताया कि उल्लास योजना के तहत जिला जेल सिरसा में कुल 150 बंदियों का पंजीकरण किया गया था, जिनमें से 105 बंदियों ने परीक्षा सफलतापूर्वक पास की है।

खेल महाकुंभ के लिए ट्रायल 13 व 14 को

सिरसा। राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ (पुरुष एवं महिला) ओपन कैटेगरी के लिए 13 और 14 अक्टूबर को जिला स्तरीय ट्रायल आयोजित किए जाएंगे। कार्यकारी जिला खेल अधिकारी डॉ. सीमा रानी ने बताया कि खिलाड़ियों को अपने साथ आधार कार्ड, हरियाणा निवास प्रमाण पत्र, परिवार पहचान पत्र की फोटोकॉपी और दो पासपोर्ट साइज फोटो लेकर सुबह 08 बजे निर्धारित स्थान पर पहुंचना होगा। उन्होंने बताया कि 13 अक्टूबर को शहीद भगत सिंह स्टेडियम में आर्चरी (तीरंदाजी), एथलेटिक्स (रनिंग/दौड़), साइक्लिंग व अन्य खेलों के ट्रायल होंगे।

एसडीएम को रामलीला महोत्सव का निमंत्रण दिया

रतिया। शक्ति नाटक क्लब, रतिया के तत्वावधान में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम को समर्पित रामलीला एवं विजयदशमी महोत्सव का दिव्य आयोजन 20 अक्टूबर तक शक्ति नगर स्थित बाबा बंदा सिंह बहादुर गुरुद्वारा ग्राउंड में बड़े हर्षोल्लास के साथ किया जा रहा है। इस संबंध में अंतिम चरण के निमंत्रण अभियान के क्रम में क्लब के प्रधान राजेश सेतिया के नेतृत्व में अंशुल बत्रा, रवि मिढ़ा व अन्य एसडीएम को उत्सव का न्योता दिया।

रतिया में शिविर में 71 लोगों का स्वास्थ्य जांचा

रतिया। भारत विकास परिषद, रतिया द्वारा परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन के 70वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आज शहीद भगत सिंह चैक, रतिया में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 71 लाभार्थियों ने स्वास्थ्य जांच की सुविधा का लाभ उठाया। इस शिविर का आयोजन प्रकल्प प्रमुख एडवोकेट डॉलीफ मंगला एवं अजय गोयल के नेतृत्व में किया गया। शिविर में लोगों के स्वास्थ्य की जांच कर उन्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया गया। भारत विकास परिषद शाखा रतिया के सचिव लोकेश खुराना ने बताया कि भाविप का उद्देश्य समाज सेवा के माध्यम से जरूरतमंद लोगों की सहायता करना तथा समाज में स्वास्थ्य एवं जनकल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। परिषद भविष्य में भी इसी प्रकार के सेवा कार्यों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती रहेगी। इस अवसर पर परिषद के प्रांत संगठन सचिव रविंद्र मेहता, शाखा संरक्षक नरेश गोयल, अध्यक्ष राज सिंगला, गतिविधि संयोजक सेवा जनक राज व अन्य मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 8295154800, 9315429403, 9253681005

भिरड़ाना से दो ड्रोन का ट्रायल शुरू, दिन में दो बार होगी उड़ान

पराली जलाने वालों पर ड्रोन से रखी जाएगी नजर, एक घंटे तक भरेगा उड़ान

रेड और यैलो जोन के गांवों पर रहेगा विशेष फोकस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद



फतेहाबाद। भिरड़ाना में ड्रोन का ट्रायल करते अधिकारी व मौजूद किसान। फोटो : हरिभूमि

धान की कटाई के साथ खेतों में पराली जलाने की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए कृषि विभाग ने निगरानी का नया तरीका अपनाया है। अब खेतों में आगजनी की घटनाओं का पता लगाने के लिए ड्रोन की मदद ली जाएगी। विभाग ने ट्रायल के लिए दो ड्रोन मंगवाए हैं और गांव भिरड़ाना से इनका परीक्षण शुरू कर दिया है। तीन किलोमीटर तक निगरानी करने की क्षमता वाले ये ड्रोन लगातार एक घंटे तक उड़ान भर सकेंगे। इनके माध्यम से खेतों की वीडियोग्राफी और तस्वीरें लेकर पराली जलाने की घटनाओं की पहचान की जाएगी। ड्रोन से जुटाई गई जानकारी के आधार पर संबंधित स्थान की पहचान कर रिपोर्ट कृषि विभाग को भेजी जाएगी। अब तक पराली जलाने की घटनाओं का पता लगाने के लिए विभाग मुख्य रूप से उपग्रह और हरसैक से मिलने वाले आंकड़ों पर निर्भर था। हालांकि, छोटी आगजनी की कुछ घटनाएं पकड़ में नहीं आ पाती थीं। ऐसे में ड्रोन के जरिए खेतों की निगरानी करने से इन घटनाओं की पहचान करने में मदद मिलने की उम्मीद है। यह पहल ड्रोन इमेजिंग एंड इंफॉरमेशन सर्विस से जुड़ी योजना के तहत की जा रही है।

12 और 3 बजे उड़ान भरेंगे ड्रोन

निर्धारित योजना के अनुसार ड्रोन दोपहर 12 बजे और 3 बजे उड़ान भरेंगे। निगरानी के दौरान धान की कटाई वाले खेतों की तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड किए जाएंगे। एक उड़ान में अधिकतम चार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को कवर करने का लक्ष्य रखा गया है। ड्रोन से प्राप्त तस्वीरों में खेतों में आग लगने के संकेतों के साथ पराली जलने के बाद जमीन पर दिखाई देने वाले निशानों को भी दर्ज किया जाएगा। इन तस्वीरों और वीडियो के आधार पर संबंधित खेतों की पहचान कर पराली जलाने की घटनाओं का रिकॉर्ड तैयार किया जाएगा। जुटाई गई जानकारी की रिपोर्ट कृषि विभाग पंचकूला को भेजी जाएगी, ताकि घटनाओं की पुष्टि करने और नियमानुसार आगे की कार्रवाई करने में तेजी लाई जा सके। इससे खेतों में आगजनी की छोटी घटनाओं पर भी नजर रखने में मदद मिल सकती है।

तीन साल के रिकॉर्ड के आधार पर चुने जाएंगे गांव

ड्रोन निगरानी के पहले चरण में लाल और पीले जोन में शामिल गांवों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए पिछले तीन वर्षों के दौरान हरसैक के रिकॉर्ड में पराली जलाने की घटनाओं वाले गांवों को प्राथमिकता दी जाएगी। इन गांवों में धान कटाई के बाद खेतों की निगरानी कर आगजनी की घटनाओं का पता लगाने का प्रयास किया जाएगा। ड्रोन के माध्यम से निगरानी का उद्देश्य केवल पराली जलाने की घटनाओं को दर्ज करना नहीं, बल्कि कार्रवाई करना भी है।

कृषि अधिकारी को सौंपी समन्वय की जिम्मेदारी

गांव भिरड़ाना में कृषि विभाग की टीम ने ड्रोन ट्रायल के साथ खेतों का निरीक्षण भी किया। इस दौरान किसानों को फसल अवशेष नहीं जलाने और उनके उचित प्रबंधन के लिए जागरूक किया गया। खंड कृषि अधिकारी डॉ. जयकुमार भोरिया और कृषि पर्यवेक्षक डॉ. मनोज खीचड़ मौजूद रहे। ड्रोन निगरानी और फसल अवशेष प्रबंधन से जुड़े कार्यों के समन्वय के लिए कृषि विकास अधिकारी, फसल अवशेष प्रबंधन नीरज कुमार को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

पराली जलाने से मिट्टी की उर्वरता पर भी असर

अभियान के दौरान कृषि विभाग की टीम ने किसानों को पराली जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। अधिकारियों ने समझाया कि खेतों में फसल अवशेष जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है और मिट्टी की उर्वरता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। भिरड़ाना में किसान गुरमेश पुत्र जगदीश, सवरण सिंह पुत्र भोला सिंह, अरविंद पुत्र कुलवंत, जसविंद्र पुत्र प्रीतम सिंह, विनोद, नानक चंद और विचितर सहित अन्य किसानों को जागरूक किया गया।

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर किया जागरूक



सिरसा। सिविल अस्पताल में शिविर में लोगों को जागरुक करते हुए।

- विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर नागरिक अस्पताल के डॉक्टरों ने किया मार्गदर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर सिविल सर्जन डॉ. पवन कुमार, स्वास्थ्य विभाग सिरसा के निर्देशन में तथा डॉ. अवतार सिंह, मनोचिकित्सक, सिविल अस्पताल सिरसा की अध्यक्षता में जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल अस्पताल सिरसा में मन जागृति अभियान के तहत मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गई।

अस्पताल में आने वाले मरीजों, उनके परिजनों एवं आमजन को मानसिक स्वास्थ्य के महत्व, मानसिक समस्याओं के शुरूआती लक्षणों, समय पर परामर्श लेने और जरूरतमंद व्यक्तियों को भावनात्मक सहयोग प्रदान करने के प्रति जागरूक किया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, वर्ष 2026 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की वैश्विक थीम असल अनुभव सुने गए असली आवाजें, असली बदलाव है जिसका भावार्थ है कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से गुजर चुके लोगों के अनुभवों को ध्यानपूर्वक सुना जाए, उनकी आवाज को सम्मान दिया जाए और उनके अनुभवों के आधार पर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में वास्तविक सुधार लाया जाए।

हेल्प लाइन नंबर जारी

अभियान के दौरान काउंसलर कंवर सैन एवं बलविंदर सिंह द्वारा लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में लोगों को बताया गया कि मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की सोच, भावनाओं, व्यवहार, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। कार्यक्रम के दौरान टेली-मानस हेल्पलाइन नंबर 14416 के बारे में विशेष रूप से जागरूक किया गया। इस अवसर पर डॉ. अवतार सिंह मनोचिकित्सक नागरिक अस्पताल सिरसा, कृतिका सैनी क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, सन्नी डेटा मैनेजर, सीआरए गौरव तथा हरमीत साइकियाट्री नर्स उपस्थित रहे।

खंड स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में 67 विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

- राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल में बच्चों की प्रतिभा के दर्शन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा



सिरसा। बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

खंड स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2026-27 का आयोजन राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकंडरी स्कूल, सिरसा में किया गया। अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी रमेश कुमार ने की। इस मौके पर प्राचार्य मदन मलिक, बीआरपी संजीव कुमार, रितिक तथा निर्णायक मंडल के सदस्य अनु मल्होत्रा, महेश कुमार, पूनम रोहिल्ला और भावना गर्ग मौजूद रहे। सतत और विकसित भारत के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार थीम पर आधारित इस प्रदर्शनी में 14 विद्यालयों के 67 विद्यार्थियों (40 छात्र, 27 छात्राओं) ने एआई, ग्रीन एनर्जी, स्वास्थ्य व स्वच्छता, देश की कृषि पद्धतियां, आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर मॉडल प्रस्तुत किए। रमेश कुमार ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनियां बच्चों में वैज्ञानिक सोच, जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ाती हैं। इस मौके पर शिक्षक भी मौजूद रहे।

किसानों को मुद्दों को लेकर संगठनों ने बनाई रणनीति

सिरसा। हरियाणा के दो बड़े मोर्चों हरियाणा किसान मजदूर संघर्ष मोर्चा और संयुक्त किसान मोर्चा हरियाणा की संयुक्त बैठक हुई, जिसमें किसानी मुद्दों पर आगे मिलकर लडने का फैसला किया गया। फसल खरीद में किसानों की हो रही लूट के खिलाफ 14 अक्टूबर को सभी मार्केट कमेटी कार्यालयों पर तालाबंदी करते हुए 3 घंटे के विरोध प्रदर्शन करेंगे और फिर भी सरकार नहीं मानती तो बड़े आंदोलन का ऐलान किया जाएगा। बैठक में किसानों ने दिल्ली में छात्रों के आंदोलन को कुचलने के लिए किए गए लाठीचार्ज, गिरतारियों का कड़ा विरोध किया है। संयुक्त बैठक की अध्यक्षता रतन मान, लखविंदर सिंह औलख, बलबीर सिंह, मनदीप नथवान ने संयुक्त तौर पर की।

महाराजा अग्रसेन जयंती पर शहर में ध्वजों के साथ निकली शोभायात्रा

- अग्रवंश के 18 गोत्रों पर आधारित विशेष रथ रहा आकर्षण का केंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा



सिरसा। शोभा यात्रा में शामिल महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

अग्रवाल सभा की ओर से शनिवार को महाराजा अग्रसेन महाराज की जयंती के उपलक्ष्य में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। अग्रवंश के 18 गोत्रों पर आधारित विशेष रथ और झांकी शोभायात्रा का मुख्य आकर्षण रहे। शोभायात्रा महाराजा अग्रसेन स्कूल से शुरू होकर सिरसा के मुख्य बाजारों में निकली। धर्म ध्वजा लेकर शोभा यात्रा में अग्रवंश की महिलाएं शामिल हुई। उन्होंने सभी को अग्रसेन जयंती व नवरात्र की शुभकामनाएं दी। महाराजा अग्रसेन जयंती पर दो दिवसीय कार्यक्रम रखा गया है। 11 अक्टूबर को महाराजा अग्रसेन स्कूल में भव्य डांडिया गरबा नृत्य एवं सांस्कृतिक समारोह होगा। शोभायात्रा में सिरसा नगर परिषद के प्रधान शांति स्वरूप, महाराजा अग्रसेन स्कूल के प्रधान अनिल गनेरीवाला, अग्रवाल सभा के प्रधान संजय गोयल साहुवाला सहित अग्रवाल समाज के लोग शामिल हुए।

तथ्यों के बिना भ्रम फैलाना लोकतंत्र का अपमानः यतींद्र

- भाजपा के जिला अध्यक्ष का विपक्षी नेताओं पर हमला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

भाजपा के जिलाध्यक्ष एडवोकेट यतींद्र सिंह ने विपक्ष द्वारा किए जा रहे प्रदर्शनों और कथित विरोध पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि चुनावी सुधार भारतीय लोकतंत्र को अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और जवाबदेह बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। भाजपा सदैव स्वच्छ, स्वस्थ और मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था की पक्षधर रही है। लोकतंत्र की असली ताकत जनता का विश्वास, निष्पक्ष चुनाव और संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता है, न कि विपक्ष का निराधार शोर, राजनीतिक नौटंकी और जनता को भ्रमित करने का प्रयास।उन्होंने कहा कि भारत का चुनावी तंत्र विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक व्यवस्था में से एक है। निर्वाचन आयोग के अनुसार, वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले देश में 96.88 करोड़ पंजीकृत मतदाता थे तथा चुनाव संपन्न कराने के लिए 10,52,664 मतदान केंद्र स्थापित किए गए थे। इतने व्यापक स्तर पर चुनावी प्रक्रिया का संचालन प्रशासनिक क्षमता, व्यापक समन्वय और लोकतांत्रिक भागीदारी को दशार्ता है। इसके बावजूद विपक्ष बिना ठोस प्रमाण के संस्थाओं पर सवाल उठा रहा है।

सुनैना चौटाला ने शुरू की सालासर बालाजी की पैदल यात्रा, 19 को पहुंचेगी

- पैदल यात्रा से पहले श्रद्धालुओं ने लगाा बाबा का जयकारा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद



फतेहाबाद। सालासर यात्रा के लिए श्रद्धालुओं के साथ रवाना होतीं सुनैना चौटाला।

इनेलो की महिला प्रदेश प्रभारी सुनैना चौटाला ने अपनी धार्मिक परंपरा और अटूट आस्था को आगे बढ़ाते हुए आज सिरसा से श्री सालासर बालाजी महाराज के पावन धाम तक की पैदल यात्रा का शुभारंभ किया। वे पिछले 7 वर्षों से निरंतर पूरे संघ के साथ बाबा सालासर बालाजी महाराज की इस पावन पैदल यात्रा में शामिल होती आ रही हैं। कार्यक्रम के अनुसार, यह धार्मिक यात्रा 19 अक्टूबर को सालासर धाम पहुंचेगी। यात्रा के शुभारंभ के अवसर पर भारी संख्या में श्रद्धालु और इनेलो कार्यकर्ता मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि हाल ही में सुनैना चौटाला ने बाबा अमरनाथ के पावन धाम में दर्शन करने के साथ ही हरिद्वार पहुंचकर गंगा मैया के दर्शन और पूजा-अर्चना भी की थी। उनकी ये यात्राएं सनातन संस्कृति, अटूट श्रद्धा और प्रभु के प्रतिगामी विश्वास का प्रतीक मानी जा रही हैं।

देश में अघोषित आपातकाल जैसे हालात बने : सैलजा

- विधायक शीशपाल केहरवाला सहित कांग्रेस नेताओं को हिरासत में लेने की निंदा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा



सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कालांवाली से कांग्रेस विधायक शीशपाल सिंह केहरवाला तथा अन्य वरिष्ठ कांग्रेस नेताओं को दिल्ली में चल रहे लोकतांत्रिक आंदोलन में शामिल होने जाते समय पुलिस द्वारा हिरासत में लिए जाने की कड़ी निंदा की। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को शांतिपूर्ण प्रदर्शन में भाग लेने का अधिकार भी नहीं है? सरकार को राजनीतिक विरोध का जवाब गिरफ्तारी के बजाय लोकतांत्रिक संवाद से देना चाहिए। सांसद ने कहा कि कांग्रेस संविधान, लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपना संघर्ष जारी रखेगी। जनता लोकतांत्रिक संस्थाओं की जवाबदेही चाहती है और सरकार को उसकी आवाज सुननी होगी। उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली और हरियाणा के अन्य क्षेत्रों की तरह सिरसा में भी लोगों को हिरासत में लेकर दूर स्थानों पर ले जाया जा रहा है।

'रतिया प्रीमियर लीग-2' का भव्य शुभारंभ

मैदानों की रौनक बढ़ाएं युवा, नशे को कहें अलविदा : भवानी

10 टीमों के 130 खिलाड़ी दिखाएंगे खेल कौशल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रतिया



रतिया। खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते भवानी सिंह व अन्य अतिथिगण।

आज का युवा यदि खेल के मैदान से नहीं जुड़ा, तो तय है कि वह नशे की दलदल से जुड़ जाएगा। इसलिए हमारी यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि हम युवाओं की असीम ऊर्जा को गलत राह पर जाने से रोकें और उन्हें खेलों के जरिए सकारात्मक दिशा दें। यह बात नशामुक्ति सेना के अध्यक्ष भवानी सिंह ने क्षेत्र के युवाओं को नशे की गर्त से बाहर निकालने और उनमें खेल के प्रति जोश भरने के उद्देश्य से आयोजित 'रतिया प्रीमियर लीग-2' के भव्य शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए।

उन्होंने युवाओं को खेलों से जुडऩे का कड़ा संदेश देते हुए कहा कि खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि ये अनुशासन, शारीरिक मजबूती और मानसिक दृढ़ता का पाठ पढ़ाते हैं। भवानी सिंह ने कहा कि जब युवाओं को खेल का स्वस्थ माहौल और उचित मंच मिलता है, तो वह स्वतः ही नशे जैसी बुरी लतों से दूर हो जाता है। उन्होंने हाल ही में आयोजित 'नमो क्रिकेट लीग' का उदाहरण देते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से समाज को नशामुक्ति की ओर ले जाने का एक सफल और प्रभावी प्रयास किया जा रहा है, जिससे युवाओं में नई चेतना जागृत हो रही है। इससे पूर्व, क्षेत्र के युवाओं में खेल के प्रति जोश और सकारात्मक ऊर्जा भरने के उद्देश्य से शुरू हुई इस रोमांचक 'रतिया प्रीमियर लीग-2' का शुभारंभ मुख्य अतिथि भवानी सिंह ने किया।

प्रतियोगिता में 130 खिलाड़ी ले रहे हिस्सा

इस अवसर पर अग्रवाल सभा के प्रधान प्रमोद बंसल ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद रहे। टूर्नामेंट के आयोजकों समाट सागू और प्रवीण मराठा ने मुख्य अतिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। आयोजकों ने बताया कि इस टूर्नामेंट में कुल 10 टीमों के लगभग 130 खिलाड़ी अपना खेल कौशल दिखाने मैदान में उतर रहे हैं। उद्घाटन मुकाबले को लेकर खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों में भारी उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर रमन बलाना, कमल अरोड़ा, बोबी गोस्वामी, स. स्वर्ण सिंह, गुरचरण सिंह खोखर, सतीश पटवारी, विपिन अलीका, गुलशन दरियापुर, नरेश बंगावां, गुरदीप अयाल्की, अमन सिंह राघव, अनिल ठाकुर और महेंद्र नंबरदार सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं खेल प्रेमी मौजूद रहे।

कुम्हार सभा ने किया प्रतिभाओं को सम्मानित

सिरसा। जिला कुम्हार सभा, सिरसा द्वारा समाज एवं जिले का गौरव बढ़ाने वाली प्रतिभाओं के स मान में रानियां रोड स्थित कुम्हार धर्मशाला में विशेष सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिला कुम्हार सभा के प्रधान कुंभा राम सिंहमार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के तहत समारोह स्थल पर पहुंचने पर अनूप कुमार प्रजापति, चेयरमैन, हरियाणा माटी कला बोर्ड, डॉ. मदन लाल ढुंढाडा, चेयरमैन बाल कल्याण समिति सिरसा व पूजा प्रजापति, एशियन गेम्स 2026, जापान में हाई जंप में कांस्य पदक विजेता व हॉकी में भारत को एशियन गेम्स में गोल्ड मैडल दिलाने वाले गांव संतनगर निवासी राजेंद्र सिंह का ढोल नगाड़ों व फूल मालाओं के साथ स्वागत किया गया। सभी ने दक्ष प्रजापति महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस मौके पर माटी कला बोर्ड के चेयरमैन अनूप कुमार ने कहा कि उनकी प्राथमिकता रहेगी की समाज को संगठित हो।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *

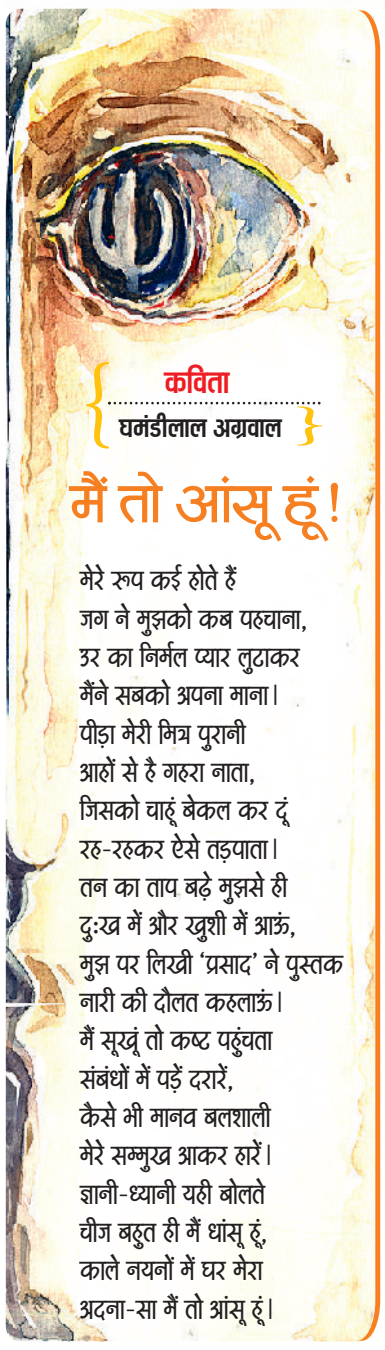

कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए

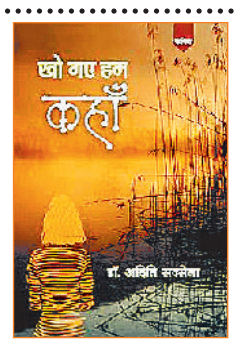

हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *